महिमामयी जल

डॉ. संजय कुमार शर्मा
वैज्ञानिक –ब, क्षेत्रीय केन्द्र राजसं;, गुवाहाटी

जीव की उत्पत्ति का स्रोत है जल
जीव के अस्तित्व का मापदंड है जल
जल ही तो जीवन है
जल बिन तो सब सून है
कथा-पुराणों में है जल की महिमा का वर्णन
केवल पृथ्वी ही है ऐसी जल से संपन्न
भाग्यशाली है वो जिसने पृथ्वी पर लिया है जन्म
जिसमें जल की धारा कल-कल बहती हर दम
जल ने उपजाए अन्न और फल
वरना धरती होती मानो मरुस्थल
क्या कर लेगा मानव चॉंद पर जाकर
क्या बना सकेगा रेत और चट्टानों पर अपना घर
कल-कल बहती नदियॉं, झर-झर झरने बहते
इस मशीनी युग में भी मानव को अपने पास बुलाते
मानो कहते अरे हमसे भी सुंदर है जगह कहीं
पाओगे शांति बस तुम आकर यहीं
सीखा हमने नदियों और सागरों से
निरंतर बढ़ते रहना पार पाकर अवरोधों से
'जीवन' और 'सीख' पाकर भी हमने क्या किया
उसी को दूषित किया जिसने हमें जीवन दिया
अब भी है समय, जागो और चेतो
जल-संरक्षण कर पृथ्वी को हरी-भरी रहने दो
दूषित न करो जल को, फेंक कर इसमें अनर्गल
वरना जीवन ही हमारा एक दिन रह जाएगा प्रश्न बनकर।

*****